तुलना और तुलना

डॉ. के. वनजा

तुलना और तुलना

डॉ. के. वनजा

भूमिका

जब से हिन्दी साहित्य का अध्ययन मैंने शुरू किया तब से हिन्दी और मातृभाषा मलयालम के साहित्य के बीच तुलना करना मेरी आदत थी। हिन्दी-अध्यापन में प्रवृत्त होने के बाद यह आदत पहले से और प्रबल हुई तथा तुलनात्मक साहित्य पर छोटे-छोटे लेख लिखने लगी। ये लेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित भी हुए। तुलनात्मक साहित्य के विविध प्रकार के शोधपत्र कई राष्ट्रीय संगोष्ठियों में मैंने प्रस्तुत किए हैं। मैंने तुलनात्मक साहित्य पर अपने निर्देशन में शोधकार्य भी करवाया और अब भी सिलसिला जारी है।

इस ग्रंथ में संकलित अधिकांश लेख हिन्दी और मलयालम के विभिन्न साहित्यकार, कालखंड, विधा आदि पर आधारित मेरे तुलनात्मक विचार हैं। कुछ लेख मलयालम साहित्य पर केंद्रित भी हैं। मेरा विश्वास है कि यह ग्रंथ हिन्दी पाठकों को हिन्दी एवं मलयालम की कुछ साहित्यिक विशेषताओं का तुलनात्मक रसास्वादन करने में सहायक सिद्ध होगा।

इस ग्रंथ के प्रकाशक जवाहर पुस्तकालय, मथुरा (उ.प्र.) के प्रति मैं विशेष कृतज्ञ हूं जिन्होंने मेरे इस प्रयत्न को सफल बनाने में सहायता की। इसकी तैयारी का पूर्ण श्रेय मैं अपने पति श्री डॉ. एन. रामन नायर को देती हूं। मेरा अनुरोध है, इसका मूल्यांकन सुधी पाठक तथा अधिकारी विद्वान करें।

-डॉ. के. वनजा

सूची

तुलनात्मक साहित्य की समस्याएं	8
भारतीय भक्तिसाहित्य में राष्ट्रीय भावनात्मक एकता का चेतनाबोध-मलयालम और हिन्दी साहित्य के विशेष संदर्भ में	15
रामकाव्य की अन्य विभूतियां : तुलसी और एषुत्तच्छन	18
सूर और चेरूश्शेरी	26
केरल के मध्ययुगीन एवं संत काव्य में राष्ट्रीय एकता एवं मानवतावादी पक्ष	34
मध्यकालीन मलयालम साहित्य में नाथ-संप्रदाय का प्रभाव	39
वर्गहीन समाज की परिकल्पना में मलयालम भक्ति साहित्य	57
भारतेन्दु युगीन मलयालम साहित्य	66
राष्ट्र की एकता के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी और मलयालम साहित्य	75
राष्ट्रीय चेतना के कवि मैथिलीशरण गुप्त, वल्लत्तोल और सुब्रह्मण्य भारती	79
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और कुट्टिकृष्णमारार	88
राष्ट्रीय नवजागरण तथा मलयालम साहित्य	95
स्वातंत्र्योत्तर मलयालम कविता में सामाजिक चेतना	101
हिन्दी एवं मलयालम की समकालीन कविता प्रवृत्ति मूलक विवेचन	109
हिन्दी एवं मलयालम की समकालीन कविता के मूल्यांकन की समस्याएं	117
अस्तित्ववादी दर्शन के धरातल पर श्री रमेश बक्षी और श्री आनन्द के उपन्यास	125
हिन्दी और मलयालम साहित्य में दलित-चेतना	132
मलयालम रंगमंच का विकास	139

मलयालम पत्रकारिता 146

हिन्दी साहित्य में केरल का योगदान 156

भारतीय भाषाएं और अंग्रेजी का वर्चस्व 166

गोदान और रंडिडंगषी (दो सेर धान्य-तकषी) 170

तुलनात्मक साहित्य की समस्याएं

आज तुलनात्मक साहित्य केवल अध्ययन की एक विधि या पद्धति मात्र नहीं, यह साहित्य की एक स्वतंत्र अवधारणा भी है। इस दृष्टि से इस क्षेत्र से संबंधित मुख्य समस्याओं पर विचार करना आवश्यक है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में यह अध्ययन अध्यापन का एक विषय बन गया है। लेकिन इस विषय का क्या स्वरूप निश्चित किया गया है? 'तुलनात्मक साहित्य' की संकल्पना क्या है? क्या इसका एक ठोस ढांचा तैयार किया गया है? तुलनात्मक साहित्य के अंतर्गत किन-किन साहित्यों को लिया गया है? विविधभाषायी साहित्य में साहित्य के किन-किन तत्त्वों को लेकर तुलना की जाएगी? इन समस्याओं के साथ विविध भाषाओं के ज्ञान की आवश्यकता भी विचारणीय बिन्दु है। इसलिए तुलनात्मक साहित्य के सन्दर्भ में सबसे पहले उभर आने वाली समस्या विविध भाषायी साहित्य में पांडित्य का अभाव है। तुलनात्मक अध्ययन के लिए दोनों साहित्यों में गहरा ज्ञान आवश्यक है। इसके अभाव में जो तुलना की जाती है वह एक व्यक्ति की भाषणकला को देखकर उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व को आंकने के समान है या उपरिप्लव है। इसके लिए अपनी अध्ययनशीलता को बढ़ाने की आवश्यकता है। नहीं तो समानता रखनेवाले विभिन्न भाषा-भाषी साहित्यकारों को ढूंढ निकालना भी कठिन कार्य है।

तुलनात्मक साहित्य में विभिन्न भाषायी साहित्य के बीच में जो दूरी है उसे निपटाने के लिए अनुवाद महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। विभिन्न भाषाओं के बीच में अनुवाद कार्य सम्पन्न होने पर यह तुलना के लिए सहायक बन जाएगा। केवल भारतीय भाषाओं के बीच में ही नहीं, विश्व भर की श्रेष्ठ साहित्यिक रचनाओं और साहित्य के इतिहास का अनुवाद भारतीय भाषाओं में अवश्य करना है। लेकिन कभी-कभी यह अनुवाद मूल रचना के साथ विश्वसनीयता नहीं बरतता है। ऐसे असफल अनुवाद तुलनात्मक साहित्य में सहायक बनने के बदले विपरीत परिणाम प्रदान करते हैं। इसके कई उदाहरण हमारे साहित्यिक क्षेत्र में हैं। लेकिन हमारे यहां विश्व की महान रचनाओं के अनूदित रूपों का अभाव है। इस अभाव की पूर्ति के लिए तुलनात्मक साहित्यिक क्षेत्र में अनुवाद पर विशेष बल देना अनिवार्य है। यहां उल्लेखनीय बात है कि Translation से ज्यादा Transcreation को अपनाना उचित है।